आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2011/41434

देव चेतना

सामाजिक, पारिवारिक विचारधारा का पाक्षिक समाचार पत्र

वर्ष : 15 | अंक : 7 | जयपुर, मंगलवार, 20 जनवरी, 2026 | पृष्ठ- 4 | मूल्य : 5 रुपए

दिव्य देवनारायण दर्शन : मानव जीवन, कर्म और समरसता का पथ

आदि देव श्री देवनारायण को दिव्य चेतना, ऊर्जा और प्रकाश का प्रतीक माना जाता है। उनका दर्शन मानव जीवन को कर्म, धर्म और पुरुषार्थ के संतुलित मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। यह केवल पूजा या उपासना की विधि नहीं, बल्कि समग्र मानव जीवन को देखने और जीने की दृष्टि है।

सनातन भारतीय दर्शन में शिव तत्व को चेतना, आनंद और शक्ति का मूल कहा गया है। कश्मीरी प्रत्यभिज्ञा दर्शन में शिव की पाँच प्रमुख शक्तियों का वर्णन मिलता है-

चित्त शक्ति (चेतना का प्रकाश), आनंद शक्ति (स्वतंत्र आनंद की अनुभूति), इच्छा शक्ति (संकल्प), ज्ञान शक्ति (बोध) और क्रिया शक्ति (सृष्टि का संचालन)।

इन सबका संयुक्त रूप ही शिव तत्व है, जो सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी और चेतना के रूप में सर्वत्र विद्यमान है।

भारतीय दर्शन के अनुसार ईश्वर पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चंद्रमा और आत्मा- इन आठ रूपों में प्रकट होता है। यही चेतन तत्व प्रत्येक मानव के भीतर भी विद्यमान है।

श्री देवनारायण को नारायण के ग्यारह कला अवतार के रूप में स्वीकार किया गया है। उनकी पूजा 'ईंटों में श्याम दर्शन' जैसे प्रतीकात्मक रूप में की जाती है। इसका अर्थ है- साधारण जीवन और साधारण वस्तुओं में भी दिव्यता का अनुभव। यह पूजा कर्म, त्याग और संतुलन का प्रतीक है।

कश्मीरी प्रत्यभिज्ञा दर्शन के महान आचार्य अभिनव गुप्त श्री देवनारायण के समकालीन माने जाते हैं। उन्होंने आदि देव श्री देवनारायण फड़ चित्रपट लोकवार्ता को दार्शनिक दृष्टि से समझा और प्रतिपादित किया।

यह लोकवार्ता गुर्जरी भाषा* में कही गई, जिससे यह दर्शन सीधे लोक जीवन से जुड़ गया।

देवनारायण फड़ केवल चित्रों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह मानव, प्रकृति और ईश्वर के आपसी संबंध को प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत करता है। इन चित्रों का निर्माण कुल भाटों द्वारा दिव्य प्रेरणा से किया गया, ताकि लोक सामान्य भी इस दर्शन को समझ सके।

आदि देव श्री देवनारायण ने गुर्जर वंश के उद्धार और लोक आराधना के लिए अपने परिवार, 33 कोटि देवी-देवताओं तथा अपने पुत्र बिल्व देवनाथ को ईंट-पाट-ज्योति स्वरूप पूजा-पद्धति का स्वयं उपदेश दिया।

यही परंपरा आगे चलकर आदि गुरु शिव स्वरूप गज-बेली गुदड़नाथ और बिल्व देवनाथ की दीक्षा परंपरा से जुड़ी।

श्री देवनारायण गोंळ धारण परंपरा को एक सहज, लोकजीवन से जुड़ा कर्मयोग बताया गया-

जहाँ नियत कर्म, कर्मफल का त्याग और यज्ञ भाव के माध्यम से दिव्यता की

प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है।

आचार्य अभिनव गुप्त ने इस संपूर्ण परंपरा को प्रत्यभिज्ञा दर्शन के रूप में समझाया-

अर्थात मनुष्य को यह बोध कराना कि दिव्य चेतना बाहर नहीं, उसके अपने भीतर ही विद्यमान है।

आज के समय में देवनारायण फड़ लोकवार्ता को वैज्ञानिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक दृष्टि से पुनः समझने की आवश्यकता है, क्योंकि यह परंपरा धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही है।

वीर गुर्जर साम्राज्य काल में, गुरुत्तर गुरुओं के नेतृत्व में अखंड सांस्कृतिक भारत के निर्माण हेतु जो सामाजिक, सांस्कृतिक और सनातन समरसता का कार्य हुआ, उस पर इतिहास में कई बार जानबूझकर पर्दा डाला गया।

राजनीतिक कारणों से हुई इस ऐतिहासिक क्षति को समझना और सत्य को सामने लाना आज आवश्यक है।

अखंड भारतीय संस्कृति में समय के साथ प्रवेश कर गई अनेक भ्रांतियों और मिथ्या विकारों का परिमार्जन करने का तात्विक आधार हमें आचार्य अभिनव गुप्त के प्रत्यभिज्ञा दर्शन में मिलता है। यह दर्शन विभाजन नहीं, बल्कि एकात्मता, चेतना और समरसता का संदेश देता है।

आदि देव श्री देवनारायण ने अपने समय के लोक जीवन के समक्ष समग्रतावादी समरसता का आधार प्रस्तुत किया-

जहाँ कोई ऊँच-नीच नहीं,
कोई हेय या त्याज्य नहीं,
और यह संपूर्ण संसार
दिव्य सत्ता का ही प्रकट रूप है।
यही श्री देवनारायण दर्शन का
मूल संदेश है-
लोक में रहकर, कर्म करते हुए,
अपनी चेतना की पहचान और
मानव मात्र का कल्याण।

योग को आदत बना लें तो वह स्वभाव में बदल जाएगा

अच्छी आदतों के परिणाम वर्तमान में मिलते हैं और बुरी आदतों के नतीजे भविष्य में छुपे रहते हैं। मनुष्य के जीवन में कुछ तो नियम होते हैं और कुछ आदतें होती हैं। अगर आदतें अच्छी हों तो नियम पालना आसान होता है। बुरी आदत वाले को नियम तोड़ने में ही मजा आता है।

भ्रष्ट आचरण न किया जाए, यह एक राजकीय नियम है। लेकिन कितने ही अच्छे लोग सत्ता में बैठ जाएं, लगता है देश से भ्रष्टाचार जा नहीं रहा। एक अधिकारी ने भ्रष्टाचार की व्याख्या करते हुए मुझे बताया था कि चार पशुओं का उदाहरण लेकर नौकरशाहों के भ्रष्टाचार को देखा जा सकता है।

पहला, पैसा अपने आप आता है- जैसे मछली पानी में रहकर पानी पी लेती है, पता नहीं लगता।

दूसरी श्रेणी के लोग गाय जैसे होते हैं, मांगकर लेते हैं। तीसरे छीनकर लेते हैं, यानी बंदर की श्रेणी। और चौथे शेर जैसे लूट ही लेते हैं। लेकिन योग को आदत बना लें तो धीरे-धीरे वह अपने आप स्वभाव में बदल जाएगा। नतीजे में अच्छी आदत अपने आप उतरेगी।

संत शिरोमणि गुरु चरण दास जी ने राष्ट्र धर्मी माता पन्नाधाय पंचवटी पौधशाला में किया पौधारोपण

राजसमंद। रोडेवाल साहब, पटियाला (पंजाब) के श्रद्धेय संत

शिरोमणि गुरु चरण दास जी की संगत ने गुरुवार को गंगासागर गांव, कालिंजर ग्राम पंचायत स्थित राष्ट्रधर्मी माता पन्नाधाय पंचवटी पौधशाला में पहुंचकर वृक्षारोपण किया। इस अवसर पर पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक चेतना का संदेश दिया गया।

कार्यक्रम में राजस्थान गुर्जर महासभा के प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष मोहनलाल वर्मा, अखिल भारतीय गुर्जर महासभा के महामंत्री किसान भाई राम सिंह कंसाणा, आशापुरा मानव कल्याण ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष नान जी भाई गुर्जर, मां बलिदानी पन्नाधाय स्मारक संस्थान के अध्यक्ष गहरी लाल गुर्जर, सरदार सुखदीप सिंह मोहाली पंजाब चंडीगढ़, प्रिंसिपल सुरजीत सिंह (संगरूर), मनजीत सिंह खेपड काठमेठी पटियाला, सरदार शमशेर सिंह गोशासिहं चण्डीगढ़, वर्मा सिंह गुर्जर काट मण्डी, गुरप्रीत सिंह चंडीगढ़, सुरेंद्र सिंह, यादवेंद्र सिंह चेची नाभा पटियाला,, ड्राइवर पायलट हंसराज गुर्जर, भंवर सिंह चौहान अध्यक्ष आशापुरा मानव कल्याण ट्रस्ट राजसमंद उपस्थित रहे।

इस अवसर पर संत शिरोमणि गुरु चरण दास जी ने कहा कि वर्तमान समय में वृक्षारोपण अत्यंत आवश्यक है। राष्ट्रधर्मी माता पन्नाधाय के त्याग और बलिदान से भरे जीवन को समाज के सामने लाना एक पुण्य कार्य है। उन्होंने आशापुरा मानव कल्याण ट्रस्ट द्वारा इस स्थल पर किए जा रहे कार्यों की सराहना की। साथ ही संत श्री के साथ सर्वधर्म गुर्जर संत समागम कार्यक्रम आयोजित किए जाने पर भी चर्चा की गई।

गुर्जर समाज के कद्दावर नेता देवकीनन्दन काका की धर्मपत्नी स्व. श्रीमती सूरजदेवी के निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम के पश्चात सभी ट्रस्टी एवं पंजाब से आए संगत के सदस्य नाथद्वारा पहुंचे, जहां उन्होंने गुर्जर समाज के प्रतिष्ठित नेता देवकीनंदन काका साहब के निवास पर उनकी धर्मपत्नी के निधन पर शोक व्यक्त किया तथा श्रद्धांजलि अर्पित कर श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

राजस्थान गुर्जर महासभा के प्रदेश अध्यक्ष एवं पूर्व मंत्री कालूलाल गुर्जर ने नाथद्वारा में देवकीनन्दन काका के निवास पर पहुँचकर उनकी पत्नी के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की तथा परिवारजनों को इस दु:खद घड़ी में सांत्वना दी।

सम्पादकीय...

डूबकर किए गए कार्य की सुगंध व्यवहार में उतरती है

जो भी करें डूबकर करें। यदि आप पूजा-पाठ कर रहे हों, कोई इबादत से गुजर रहे हों, थोड़े समय ही भले आप यह काम कर रहे हों- पर डूबकर करिए। उतने वक्त भूल जाइए कि पीछे क्या घटा था और आगे क्या होने वाला है। जो लोग 24 घंटे में अपने तयशुदा धार्मिक कृत्य पूरी तरह इनवॉल्व होकर करेंगे, बाकी समय उनका व्यवहार बहुत आकर्षक हो जाएगा।

उस थोड़ी देर डूबकर किए गए कृत्य की सुगंध दिनभर किए जा रहे कामों में उतर जाएगी। फिर आप परिवार में हों, कारोबार में हो, आपका व्यवहार आकर्षक हो ही जाएगा। लोग आपके आसपास सादगी, साफगोई, सच्चाई और मिठास महसूस करेंगे। क्योंकि आपको फिर अपनी दिनचर्या में चार तरह के लोगों से मिलना है- एक होते हैं निकट के लोग, दूसरे सामान्य संबंध वाले लोग, तीसरे व्यर्थ के लोग और चौथे प्रभावशाली लोग। इन चारों में समान रूप से आकर्षक व्यवहार करिए। ये अपने आप में एक योग है, मेडिटेशन है- क्योंकि भक्त अपना भगवान सबमें देखता है।

दिव्य ज्योतिर्मय गुरुतर गुरु गोपते

गुर्जर गोपाल : सभ्यता और संस्कृति का संक्षिप्त व बोधगम्य दर्शन

अखंड भारत राष्ट्र की अवधारणा प्रकृति से जुड़ी हुई है। जंबूद्वीप में स्थित भारतखंड को मनुष्य ने नाम दिया, किंतु इसकी आत्मा प्रकृति से संचालित है। सृष्टि का रचयिता स्वयं स्थिर है, पर वही संपूर्ण जगत को गति देता है। सभी प्राणी नश्वर हैं और नश्वरता का स्वभाव ही है- भूल करना।

सूर्य का एक नाम भारत भी है। सूर्य की किरणें जहाँ-जहाँ तक पहुँचती हैं, वहीं तक जीवन है। इसी अर्थ में अखंड भारत राष्ट्र को सूर्य की दिव्य ज्योति से जोड़ा गया है। मनुष्य के भीतर भाव, कल्पना और अनुभूति का केंद्र मस्तिष्क है, किंतु अत्यधिक तर्क-वितर्क मन का दोष बन जाता है।

पुरुष तत्व को भारतीय दर्शन में दिव्य प्राण ऊर्जा माना गया है-

मनोमयोऽयं पुरुषः

मनुष्य का मन हृदय में सूक्ष्म रूप में स्थित होकर संपूर्ण देह का संचालन करता है। यही मन राष्ट्र, समाज और व्यवस्था की रचना करता है।

सूर्य केवल प्रकाश नहीं, बल्कि जीवन-ऊर्जा का स्रोत है। देह में अग्नि, तेज और चेतना- सूर्य की दिव्य ज्योति के ही रूप हैं। संसार के रंग सूर्य की किरणों से उत्पन्न होते हैं। पुराणों में सूर्य की किरणों को छंदों और शक्तियों के रूप में वर्णित किया गया है।

सूर्य की तीन शक्तियाँ- उत्पादन, पालन और संहार- जीवन चक्र का आधार हैं। इसीलिए भारतीय परंपरा में सूर्य को परमात्मा, जगतगुरु और जीवनदाता कहा गया है।

स्त्री-पुरुष संबंध और जीवन दर्शन

यदि प्रेमविहीन विवाह को पवित्र माना जाता है, तो प्रेमयुक्त संबंध को पाप क्यों कहा जाए- यह प्रश्न भारतीय चिंतन में सदैव उपस्थित रहा है। स्त्री और पुरुष का संबंध केवल सामाजिक नहीं, बल्कि जैविक, मानसिक और आध्यात्मिक भी है।

शिव-शक्ति का दर्शन बताता है कि सृष्टि का आधार नारी शक्ति है। संतान के पालन-पोषण के लिए स्त्री-पुरुष का दीर्घकालीन साथ आवश्यक हुआ, जिससे विवाह संस्था का जन्म हुआ।

भारतीय पुराणों के आख्यान- देव-असुर संग्राम, समुद्र मंथन, महाभारत- सब अंतर्मन के संघर्ष और चेतना के विकास के प्रतीक हैं। ये कथाएँ मनुष्य को भय से अभय की ओर ले जाने की आध्यात्मिक प्रक्रिया को समझाती हैं।

आत्म प्रबंधन : जीवन को समझने की कला

आधुनिक समाज में व्यक्ति का मूल्य उसकी आय से आँका जाने लगा है, जैसे राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को जीडीपी से। किंतु मनुष्य का वास्तविक मूल्य उसकी संबंध बनाने की क्षमता, विवेक, और आंतरिक संतुलन में है।

समाज परस्परावलंबन से चलता है। जहाँ व्यवहार है, वहाँ समस्याएँ भी हैं। समाधान बाहर नहीं, भीतर से आता है- यही आत्म प्रबंधन है।

सुख और दुख का कारण बाहर नहीं, हमारे भीतर होता है। दूसरे को बदलने से पहले स्वयं को समझना आवश्यक है। आत्म निरीक्षण से ही शांति, आनंद और अभय संभव है।

हम प्रायः दूसरों को उनके वास्तविक स्वरूप में नहीं, बल्कि अपनी कल्पनाओं और संस्कारों के चश्मे से देखते हैं। इसलिए न हम किसी को पूरी तरह जान पाते हैं, न न्याय कर पाते हैं।

मनुष्य : एक जीवित प्रयोगशाला

मनुष्य का जीवन अंतर्मन मंथन की प्रयोगशाला है। इसी मंथन से आध्यात्मिक चेतना का नवनीत प्राप्त होता है।

प्रकृति का हर कण एक-दूसरे से जुड़ा है। पर्यावरण चेतना का अर्थ है- प्रकृति को उसके स्वाभाविक रूप में रहने देना।

जब दृष्टि और चरित्र की मूर्छा टूटती है, तभी जागरण होता है।

गुर्जर देव दर्शन और लोक परंपरा

उत्तराखंड के द्वाराहाट में स्थित गुर्जर देव मंदिर के अवशेष गुर्जर लोक चेतना और सहज जीवन धर्म के प्रतीक हैं। कश्मीर का अद्वैत शैव दर्शन और आचार्य अभिनवगुप्त की प्रत्यभिज्ञा दर्शन परंपरा आत्म प्रबंधन के लक्ष्य को स्पष्ट करती है-

ज्योतिर्मय चेतना में स्थित होना।

गुर्जर लोक संस्कृति में देवनारायण अवतार मानव चेतना के परिष्कृत रूप का प्रतीक हैं। उनका संदेश स्पष्ट है-

पृथ्वी पर मनुष्य से बड़ा कोई देव नहीं।

निष्कर्ष : आत्म प्रबंधन प्रविधि ही कर्म, ज्ञान, भक्ति और विवेक का समन्वय है।

लेने की इच्छा मन को संकुचित करती है, देने की भावना मनुष्य को विराट बनाती है।

प्रेम ही भक्ति की शुरुआत है और समर्पण उसका पूर्ण रूप।

मनुष्य जब पदार्थ में चेतना और चेतना में पदार्थ को देखने लगता है- तभी जीवन का यथार्थ प्रकट होता है।

दिव्य देवनारायण दर्शन : मानव जीवन, कर्म और समरसता का मार्ग

आदि देव श्री देवनारायण को दिव्य चेतना, ऊर्जा और प्रकाश का स्वरूप माना गया है। उनका दर्शन मानव जीवन को कर्म, धर्म और पुरुषार्थ के मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। यह दर्शन केवल पूजा-पद्धति नहीं, बल्कि समग्र मानव जीवन की दृष्टि है।

सनातन भारतीय दर्शन के अनुसार शिव तत्व को चेतना, आनंद और शक्ति का मूल माना गया है। कश्मीरी प्रत्यभिज्ञा दर्शन में शिव की पाँच प्रमुख शक्तियाँ स्वीकार की गई हैं-

1. चित्त शक्ति - जिससे परम चेतना स्वयं प्रकाशित होती है।

2. आनंद शक्ति - जिससे बाहरी वस्तुओं से स्वतंत्र आनंद की अनुभूति होती है।

3. इच्छा शक्ति - जो असीम संकल्प को जन्म देती है।

4. ज्ञान शक्ति - जिससे सच्चा बोध उत्पन्न होता है।

5. क्रिया शक्ति - जो सृष्टि की रचना और संचालन करती है।

इन शक्तियों का संयुक्त स्वरूप ही शिव तत्व है, जो सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी और चेतना के रूप में सर्वत्र विद्यमान है।

भारतीय दर्शन में ईश्वर को पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चंद्रमा और आत्मा -इन आठ रूपों में उपस्थित माना गया है। यही चेतन तत्व मानव के भीतर भी विद्यमान है।

श्री देवनारायण को नारायण के ग्यारह कला अवतार के रूप में स्वीकार किया गया है। उनकी पूजा ईंटों में श्याम जैसे प्रतीकात्मक रूप में की जाती है, जो साधारण जीवन में दिव्यता को अनुभव करने का माध्यम है। यह पूजा कर्म, त्याग और संतुलन का प्रतीक है।

कश्मीरी प्रत्यभिज्ञा दर्शन के महान आचार्य अभिनव गुप्त श्री देवनारायण के समकालीन माने जाते हैं। माना जाता है कि उन्होंने देवनारायण फड़ (चित्रपट) की लोक परंपरा को दार्शनिक दृष्टि से समझने और प्रस्तुत करने का कार्य किया।

यह फड़ चित्रपट देवनारायण की लीलाओं और सृष्टि की घटनाओं का प्रतीकात्मक चित्रण है, जिसे उनके कुल भाट द्वारा दिव्य प्रेरणा से बनाया गया।

श्री देवनारायण ने समाज में समरसता, लोककल्याण और आध्यात्मिक समानता का संदेश दिया। उन्होंने अपने अनुयायियों को सहज जीवन, कर्मयोग और त्याग का मार्ग बताया।

उनकी परंपरा में दीक्षा, मंत्र और साधना को आडंबर रहित, लोक जीवन से जुड़ा रखा गया।

समय के साथ यह समृद्ध परंपरा लुप्त होती जा रही है। आज आवश्यकता है कि देवनारायण फड़ लोकवार्ता और प्रत्यभिज्ञा दर्शन को वैज्ञानिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक दृष्टि से पुनः समझा जाए।

अखंड भारत की सांस्कृतिक एकता और सामाजिक समरसता को बनाए रखने में गुर्जर परंपरा और वीर गुर्जर साम्राज्य का बड़ा योगदान रहा है, जिसे ऐतिहासिक कारणों से दबा दिया गया। इन तथ्यों को सामने लाने के लिए प्रत्यभिज्ञा दर्शन एक मजबूत आधार प्रदान करता है।

श्री देवनारायण का दर्शन किसी भी प्रकार के भेदभाव, असुंदर या हेय भाव को स्वीकार नहीं करता। यह दर्शन सिखाता है कि यह संपूर्ण संसार दिव्य सत्ता का ही प्रकट रूप है।

दिव्यता और संसार के बीच का संबंध देवनारायण फड़ और ईंटों में श्याम के प्रतीकों के माध्यम से समझाया गया है।

श्री देवनारायण ने मानव मात्र के कल्याण हेतु समग्रतावादी विश्व दृष्टि दी- जहाँ हर व्यक्ति, हर प्रकृति और हर जीवन मूल्यवान है।

इतिहास का वह अमर नायक दुल्ला भट्टी जिसकी याद में मनाई जाती है लाहिड़ी में

आज लाहिड़ी पर्व है। इस पर उसे हमारे इतिहास के एक अमर नायक का विशेष संबंध है। आइए विचार करें इतिहास के उस अभिनंदनीय व्यक्तित्व के जीवन वृत्त पर जिसने अपने सत्कार्यों के अपने काल में यश प्राप्त किया और लोगों ने उसके सत्कृत्यों का वंदन करते हुए उसे अपना पूजनीय चरित्र बना लिया। इसे लोग दुला भट्टी के नाम से जानते हैं। जिसके नाम से हम आज तक भी लोहड़ी पर्व मनाते हैं।

गुर्जरों का एक गोत्र भाटी है जो कि अत्यंत प्राचीन है, और इसकी शाखा के लोग आज तक भी राजस्थान, भारत व पाकिस्तान में बिखरी हुई लगभग दो सौ शाखाओं में मिलते हैं। इनमें भाटी राजपूत, भाटी गुर्जर व पंजाब के भट्टी, भट्टी मुसलमान, मुगल, जाट, सिख इत्यादि सम्मिलित हैं।

ऐसी ही किसी एक शाखा का व्यक्ति था दुला भट्टी जो कि किन्हीं कारणों से मुसलमान बन गया था ? वह व्यक्ति बहुत ही दयालु स्वभाव का था, लोगों के कष्टों को देखकर उसका हृदय द्रवित हो उठा करता था। हो सकता है कि वह प्रारंभ में विद्रोही हिंदू रहा हो पर कालांतर में किसी प्रकार के दबाव में आकर मुस्लिम बन गया था। मुस्लिम बनकर भी उसका अपने धर्म बंधुओं के प्रति व्यवहार अत्यंत भद्र रहा। हिंदुओं ने भी उसकी विवशता और बाध्यता को समझा तथा उसके प्रति सभी ने सहयोगी दृष्टिकोण अपनाया।

दुला भट्टी का मूल स्वभाव विद्रोही का था, इसलिए वह मुस्लिम बनकर भी राजभक्त नही बन पाया। अपने मूल स्वभाव के अनुसार वह विद्रोही ही बना रहा। उसकी सोच थी कि सत्ता और राजनीति निर्धन वर्ग का कल्याण नही कर पाती, और ना ही उसके पास उन लोगों के कल्याण का कोई सपना होता है ना कोई योजना होती है, ना कोई लक्ष्य होता है। भारतीय लोगों की निर्धनता को उस वीर हिन्दू योद्धा ने निकटता से देखा था, इसलिए वह उनके ताप संतापों के बंधनों को शिथिल करने के लिए स्वतंत्रता का एक योद्धा बनकर उठ खड़ा हुआ। परंतु उसका मार्ग तनिक परंपरा से हटकर था। वह सेना बनाकर मुगल बादशाह अकबर से भिड़ने के स्थान पर उसे अन्य प्रकार से अपने विद्रोहों से उत्पीड़ित करता था। उसका लक्ष्य जनहित था और जनहित को सर्वोपरि मानकर वह अपना जीवन अपने लोगों की सेवा में समर्पित कर चुका था।

दुला भट्टी के साहसिक कार्य

दुला भट्टी ने अपनी जनसेवा के लक्ष्य की साधना के लिए अनोखा परंतु अत्यंत संकटों से परिपूर्ण मार्ग का चयन किया। उसने मुगल बादशाह अकबर के राज्य में अमीरों, जमींदारों और जागीरदारों के यहां डकैती डालनी आरंभ कीं और उनसे प्राप्त धन को वह अपने निर्धन देशवासियों के कल्याण और उत्थान में लगाने लगा। इससे दुला भट्टी के प्रशंसकों और चाहने वालों की संख्या बढने लगी। निर्धन लोग अपनी इच्छा और आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसके पास जाते और अपना दुखड़ा रोते। उनके दुखों को सुनकर दुला भट्टी उठ खड़ा होता और जैसे भी संभव होता उनकी समस्याओं का समाधान करता।

मुगल बादशाह से ले ली शत्रुता मोल

दुला भट्टी उस समय की परिस्थितियों के अनुसार दबाव में मुसलमान होकर भी भारतीय लोगों और हिंदुओं की जिस प्रकार सेवा कर रहा था उसका पता अकबर को ना चले भला यह कैसे संभव था ? अकबर को जब दुला भट्टी के विषय में ज्ञान हुआ तो वह अत्यंत क्रोधित हुआ। उसने अपने लोगों को आदेशित किया कि उसे डाकू घोषित कर जितनी शीघ्र हो सके उतनी शीघ्रता से समाप्त कर दिया जाए। इससे अकबर के सैनिक दुला भट्टी की खोज में निकल गये। परंतु दुला भट्टी के प्रशंसक लोग दूर-दूर तक फैले हुए थे उन्होंने भी अपने लोकोपकारी साथी को हृदय से अपना नेता ही मान लिया था। इसलिए अपने नायक के प्रति कृतज्ञता का भाव ज्ञापित करना प्रत्येक व्यक्ति का पुनीत कार्य था। जिसका निर्वाह करने के लिए उन लोगों ने अपने नायक का सुरक्षा चक्र तैयार कर लिया। ये लोग दुलाभट्टी को सुरक्षित करने के लिए गुप्तचर के रूप में कार्य करने लगे, जैसे ही कहीं कोई मुगल सैनिक इन्हें दिखता ये उसकी सूचना अपने माध्यमों से अपने नायक दुला भट्टी के पास पहुंचा देते और इस प्रकार दुला भट्टी बचकर निकल भागता। दुला ने मुगल सेना को बहुत दिनो तक छकाया।

अकबर भारतीय जनता को अपने नायक दुला भट्टी के विरूद्ध ना तो भड़का सका और ना ही उसके धर्म को खरीद सका।

दुला भट्टी का कार्य पूर्ववत बड़ी शांति के साथ जारी रहा। वह मुगलों को लूटता और उस धन से निर्धन लोगों की पुत्रियों का विवाह बड़े धूमधाम से करता। कहीं-कहीं वह यदि व्यक्तिगत रूप से किसी विवाह समारोह में उपस्थित ना हो पाता था तो वहां अपनी ओर से धन भेजकर सारी व्यवस्था अपने लोगों के माध्यम से करा देता।

असहाय मुगल अधिकारी और दुला भट्टी

कितने ही अवसरों पर मुगल सैनिकों के हाथ पड़ते-पड़ते दुला भट्टी रह गया था। जब सैनिक निराश होकर अपने उच्चाधिकारी को बताते कि उसे पकडने में वह एक बार पुन: निष्फल रहे हैं, तो उन पर अपने उच्चाधिकारियों की डांट पड़ती उसके पश्चात अकबर बादशाह की डांट संबंधित सूबेदार पर पड़ती थी।

दुला भट्टी के लोग पंजाब, जम्मू कश्मीर आज के राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, हरियाणा, राजस्थान और पाकिस्तान के भी बहुत बड़े भूभाग पर सक्रिय हो गये थे। इतने बड़े भूभाग में अकबर ने कई बार 'ऑप्रेशन भट्टी' चलाया, परंतु परिणाम निराशाजनक ही निकला।

निर्धन ब्राह्मण की पुत्री का विवाह

एक बार की बात है कि एक निर्धन ब्राह्मण अपनी पुत्री (जिसका नाम सुंदर मुंदरिये था) के विवाह में सहायता प्राप्त करने हेतु दुला भट्टी के पास गया। उसने अपनी व्यथा-कथा दुला भट्टी को सुनाई, तो दुला भट्टी उसकी सहायता के लिए तत्पर हो गया। उसने उस ब्राह्मण को निश्चिंत कर घर भेज दिया और कह दिया कि वह शीघ्र ही उसके घर आएगा।

अकबर ने कराई दुला भट्टी को मारने की पूरी तैयारी

निश्चित समय पर दुला भट्टी उस ब्राह्मण के घर गया। वह उसकी दरिद्रता को देखकर बहुत दु:खी हुआ। उसे वहां ज्ञात हुआ कि उस लडक़ी सुंदर मुंदरिये को कोई भाई नही था। अत: वह स्वयं उस लडक़ी का धर्मभाई बन गया। अब तो उसने स्वयं ने और भी अधिक मनोयोग से सुंदर मुंदरिये के विवाह का दायित्व संभाल लिया। इस घटना से सुंदर मुंदरिये के गांव परिवार के लोग तो परिचित हो ही गये, साथ ही अकबर के गुप्तचरों को भी ज्ञात हो गया कि सुंदर मुंदरिये को दुला भट्टी ने अपनी बहन मान लिया है, तो इसके विवाह में उसका आना निश्चित है। अत: अकबर के सैनिक दुला भट्टी के विषय में सावधान होकर पूरी तैयारी के साथ उसके आने की प्रतीक्षा करने लगे। अकबर ने भी अपने सैनिकों की सहायता के लिए पर्याप्त छद्म सेना भेज दी। अब इन सबका काम और लक्ष्य एक ही था कि जैसे भी हो दुला भट्टी का काम समाप्त किया जाए। अकबर भी नही चाहता था कि इस बार दुला भट्टी को पकडने में उसकी सेना असफल रहे। क्योंकि वह अपनी सेना को सहायता दे सकता था, पर उस सहायता के बदले उसे अपना शिकार भी चाहिए था। इसलिए आलस्य या प्रमाद के लिए वह किसी भी प्रकार से तैयार नही था। वह एक छोटे से व्यक्ति की इतनी बड़ी चुनौती को पूर्णत: कुचल देना चाहता था जो कि उसके पूरे साम्राज्य के लिए एक सिरदर्द बन चुका था।

सुंदर मुंदरिये का विवाह बड़े समारोहपूर्वक संपन्न हो गया। चारों ओर प्रसन्नता का वास था। पिता को असीम प्रसन्नता हो रही थी कि सुंदर मुंदरिये के भाई ने पूरी सत्यनिष्ठा का परिचय देते हुए अपनी बहन का वैवाहिक कार्यक्रम संपन्न करा दिया। यही स्थिति मां की थी। दोनों पति-पत्नी अपने जीवन की एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी से आज मुक्त हो गये थे। इससे भी अधिक प्रसन्नता उन्हें इस बात की थी पुत्री सुंदर मुंदरिये के लिए जीवन भर के लिए एक भाई मिल गया था। जिसे पाकर वह हृदय से गदगद थे।

विवाह कार्यक्रम में दुला भट्टी स्वयं उपस्थित हुआ था। वह अपने साथ दहेज का सारा सामान लेकर आया था। कहते हैं कि इसके साथ-साथ वह सौ मन शक्कर भी लेकर आया था। जब विवाह की सारी औपचारिकताएं पूर्ण हो गयीं तो दुला भट्टी ने अपनी बहन सुंदर मुंदरिये की विदाई के समय उसने भाई होने के कारण बहन के शॉल में शक्कर भरकर बारातियों के सामने रख दी। शक्कर के अधिक भार के कारण शॉल अधिक देर तक उस शक्कर का भार वहन नही कर सका। जिससे शॉल फट गया।

शक्कर (एक शुभ कार्य) के भार से शॉल का फट जाना, मात्र एक संयोग था या यह किसी अशुभ संयोग का संकेत था ?

सैनिकों ने आ घेरा दुला भट्टी को।

आज तक अपने शुभकार्यों से जो व्यक्ति सर्वत्र यश प्राप्त कर रहा था, पता नही आज उसके लिए क्या होने जा रहा है ?

जब दुला भट्टी अपनी बहन की डोली को विदा कर रहा था तब भी अकबर के छद्म सैनिक वहां उपस्थित थे, परंतु उन्होंने उस समय तक उससे कुछ नही कहा जब तक डोली विधिवत विदा नही हो जाए। जैसे ही डोली विदा हुई तो अकबर के छद्मी सैनिकों ने अचानक दुला भट्टी पर आक्रमण कर दिया। इस हमला में दुला भट्टी को संभलने तक का अवसर नही दिया गया। इतनी शीघ्रता से और तेजी से हमला किया गया कि दुला भट्टी को बचने तक का भागने तक का अवसर नही मिला। कुछ ही समय के संघर्ष के उपरांत दुला भट्टी को मार दिया गया। इस प्रकार एक धर्मरक्षक सैनिक का बलिदान हो गया।

लोगों ने मनाया भारी शोक

शहीद की परिभाषा करते हुए विद्वानों का मत रहा है कि- 'जो मनुष्य निरंतर चुनौती देने पर भी अपने आदर्श पर दृढ़ता से डटा हुआ अपने प्राणों की आहुति दे दे अथवा बलिदान हो जाए, किंतु अपनी धारणा में परिवर्तन न लाए ऐसे बलिदानी पुरूष को शहीद कहते हैं। दूसरे शब्दों में जिस मनुष्य को अपने प्राण सुरक्षित करने के लिए शत्रुओं द्वारा कम से कम एक अवसर प्रदान किया जाए, पर फिर भी वह अपने आदर्शवादी मार्ग को त्याग देने के लिए तैयार न हो, वह शहीद कहलाता है।'

यदि शहीद की इस परिभाषा के अनुसार दुल्ला भट्टी के जीवन को देखा जाए, तो वह वीर किसी भी प्रकार से शहीद से कम नही था। उसका एक जीवन ध्येय था (जो निस्संदेह महान ध्येय था) निर्धनों की सेवा, स्वदेशी लोगों की नि:स्वार्थ भाव से सेवा। हम देखते हैं कि उसे तत्कालीन शासन सत्ता ने सुधरने का अवसर भी दिया और उसके स्वयं के पास भी विकल्प था

(शेष पृष्ठ 4 पर)

कमल पुष्प अवतारी श्री देवनारायण नमोस्तुते

कमल फूल प्रतीक अंतर्मन अभिलाषा सूर्योदय रश्मियों सा धरती का प्यार

हमारा अंतर्मन ही खिलता हुआ कमल फूल सूर्योदय ब्रह्म अमृतवेला जागरण है। अंतर्मन प्रेम योग प्रतीक खिलता हुआ सहस्त्रदल कमल फूल मानव जीवन लक्ष्य प्रतीक है। अंतर्मन फूल की अभिलाषा प्रतीक माखनलाल चतुर्वेदी की रचना फूल की अभिलाषा मातृभूमि समर्पित प्रेम प्रतीक है। हमारे यहां कमल फूल सृष्टि संकल्प अर्थात संकल्प सृष्टि प्रेम प्रतीक भी कहा गया है। संकल्प रूप,कामना, इच्छा, अभिलाषा भाव रूप प्रयुक्त शब्द है।

डॉक्टर संपूर्णानंद जी के अनुसार आध्यात्मिक सूर्य में से मन रूपी कमल विकसित होता है। आध्यात्मिकता का प्रतीक धर्म है। धर्म से मन को विकसित करने वाला प्रतीक कमल पुष्प है। कमल के बीच में, मन के बीच में परम तत्व ब्रम्हांड का ज्ञान है। अंड, पिंड, ब्रह्मांड प्रतीक कमल है। मन रूपी कमल के बीच में परम ज्ञान रूपी' रत्न मणि' ही अंतर मन मंथन रूपी सार तत्व है। जिस पर एकाग्र होकर केंद्रीभूत रहना चाहिए। प्राण रूपी जल को हम वहां गिरा कर उसके प्रति अपनी जागरूकता को प्रकट करते हैं। अंतर्मन कमल के विकसित होने पर उसमें मणि रूपी ज्ञान का बोध होता है।

नारी अंतर्मन की अभिलाषा भी चारुता अर्थात सौंदर्य प्रतीक कमल फूल है। हमारे यहां तांत्रिक साधना एवं प्रेम योग प्राप्ति प्रतीक कमल पर कमल दर्शाया गया है। कालिदास के कुमारसंभव में एक श्लोक हैं-

कमलात्क कमलोत्पत्ति:
श्रूयते न च दृश्य थे।
बालें! तव मुंखाम्भोजे कथ
मिंन्दि वरम्।
मुखेन का पदम् सुगंधिना
निशी, प्रवेप मानाधत्पत्र
शोभिना।
तुषार वृष्टि शत पद्म संपदा,
सरोज संधान दिवाकर पद्म।

नारी को पुष्प कहा भी गया है। पुष्पिता नारी रजस्वलातं कामेषणा में है। नारी योवनागम के समय शरीर शाखाओं के साथ पूर्ण पल्लवित होती है। फिर देह प्रकृति वश रजस्वला बनती है। कामेषणा इसका उत्तर परिणाम है। फिर पुरुष समागम और गर्भधारण उनका प्रकृति स्वभाव है। प्रसू प्रजनन से नारी फलवती बनती है। नारी का फलवती बनना उसका सफल जीवन धर्म है। नारी को सौभाग्य फला कहा गया है। कालिदास के शब्दों में 'प्रियेषुं सौभाग्य फला ही चारुता 'नारी जीवन का सौंदर्य और लक्ष्य है। यह सब कुछ कमल पर कमल में प्रतीकिकृत है।

राजस्थान व मध्यप्रदेश के मालवा अंचल में श्री देवनारायण की बड़ी

प्रसिद्धि है। चतुर्भुज भगवान नारायण योगी वेश धारण करके, जब सवाईभोज पत्नी साडू को छळने जाते हैं साडू की भक्ति से प्रसन्न होकर उसे वर मांगने को कहते हैं। वर के रूप में साडू चतुर्भुज नारायण जैसा पुत्र प्राप्त करने की अपनी अभिलाषा व्यक्त करती है। तब भगवान उसे माघ माह के शुक्ल पक्ष की सप्तमी- सूर्य सप्तमी जिसे गुर्जर लोक संस्कृति में देव सप्तमी को कमल पुष्प में अवतार धारण करने का वचन देते हैं।

गुर्जरत्रा लोक संस्कृति में श्री देवनारायण को कमल पुष्प अवतारी अर्थात ब्रह्मांड सृष्टि प्रतीक कमल पुष्प में श्री देवनारायण का अवतार माना जाता है।श्री देवनारायण लोक वार्ता में जयमति सवाई भोज को पति रूप में वरण करने के पश्चात बगड़ावतों के साथ गढ़ गोठा आने से पूर्व दो फूल के जवाब रूप बगड़ावतों के ज्ञान का परीक्षण करने की अभिलाषा को अपनी सखी हीरा के माध्यम से व्यक्त करती है।

सवाई भोज प्रेयसी पत्नी जयमति की सखी हीरा को बाग में आई देखकर पूछते हैं! हीरा कैसे आई है? हीरा कहती है बाईसा ने मुझे भेजा है आपको निरखने और दो फूलों का जवाब मंगाया है।

सवाई भोज बगड़ावत के भाई नियां कलम दवात मंगवा कर लिख कर फूलों का जवाब जयमति को हीरा के साथ भेजते हैं।

फूलों में बड़ा फूल कपास का फूल एक टके का आदमी भी कपास के फूल से निकले सूत के कपड़े पहनकर लाख टके का आदमी बन जाता है।

संसार रूपी घर को दीपक रूपी प्रकाश अंधकार से विहिन करता है, इसलिए दीपक भी संसार का एक महत्वपूर्ण फूल है।

फूलों में बड़ा फूल गाय और घोड़ी का बच्चा है गाय का बच्चा खेती में हल चलाने के काम आता है और घोड़ी के बच्चे की शक्ति के बल पर संसार का राज्य चलता है।

फूलों में बड़े फूल सूर्य और चंद्र हैं जिनसे संसार कर्म और विश्राम की शक्ति प्राप्त करता है।

फूलों में सबसे बड़ा फूल रुपया और राम है।राम का भजन करने से मनुष्य सद्गति प्राप्त करता है और रुपए से संसार के काम सधते हैं। यह सभी फूल बरसात पर निर्भर है जिसे हमारे यहां वर्षा के अधिष्ठाता इंद्रदेव के रूप में पौराणिक साहित्य में वर्णित किया गया है। इंद्रदेव जीव जगत में मनुष्य के अंतर्मन का प्रतीक है अर्थात स्त्री पुरुष अंतर्मन प्रेम सौरभ अविरल प्रवाह से ही यह सृष्टि चक्र है अन्यथा सब कुछ व्यर्थ है।

भगवान विष्णु ने अपने नेत्र को ही कमल के स्थान पर शंकर भगवान को अर्पित कर दिया था। स्वास्तिक प्रतीक भी कमल का पूर्व रूप है। तांत्रिक साधना में शरीर के अंतरंग अंतर्मन अष्टदल कमल, द्वादश दल कमल, षोडश दल कमल, सहस्त्र दल कमल, और प्रात:हस्त दल कमल दर्शन का उल्लेख है।

साहित्य में हृदय रूपी कमल के विकसित होने का उल्लेख प्राप्त होता है।सूर्य के उदय होने पर कमल खिलता है अर्थात सूर्य रश्मि प्रेम ही सृष्टि में जीवन का आधार है। ब्रह्म रूपी सूर्य के ज्ञान से मन रूपी कमल विकसित होता है। मन ही मनुष्य के बंधन और मोक्ष का कारण है। पुरुष मनोमय ही है। स्त्री पुरुष शरीर में स्वयंभू लिंग कुंडलिनी चक्र के मूलाधार में उल्टे कमल के समान है, जिसे जागृत करके उलट देना है, स्त्री पुरुष शरीर में इड़ा, पिंगला तथा सुषुम्ना नाड़ियां एक दूसरी से आलिंगित होकर भौंरे की तरह गुंजन कर रही है। योगी जन अभ्यास से इसे जागृत करके ब्रह्मरंध्र में संहस्त्रदल कमल से युक्त करते हैं, जहां यह चिरंतन प्रेम योग रूपी झरते हुए पीयूष अमृत का पान करती है।

माखनलाल चतुर्वेदी की रचना में एक फूल की अभिलाषा मातृभूमि के प्रति समर्पण है। इस दृष्टि से स्त्री पुरुष अंतर्मन की अभिलाषा समर्पण भाव है समर्पण भाव प्रेम और भक्ति रूप ग्रहण करके अंतर्मन में अविरल प्रेम प्रवाह, मानव अंतर्मन की अभिलाषा है।

- मोहनलाल वर्मा, संपादक
देव चेतना मासिक पत्रिका जयपुर

इतिहास का वह अमर नायक दुल्ला भट्टी... पृष्ठ 3 का शेष

कि वह इस्लाम पंथ (मजहब)स्वीकार करने के कारण मुस्लिम होने के कारण अकबर का हितैषी बनकर उसका कृपापात्र बन जाता। पर उसने ऐसे किसी भी अवसर का उपयोग करना उचित नही माना। वह संघर्ष से पीछे नही हटा और निरंतर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता गया।

अंत में जब वह हुतात्मा हो गया तो जनता के लिए यह समाचार किसी वज्रपात से कम नही था, जितनी दूर तक दुल्ला भट्टी की मृत्यु का समाचार गया, उतनी ही दूर तक लोगों ने अपने नायक की मृत्यु पर गहरा शोक मनाया। उसकी मृत्यु पर लोगों ने जिस प्रकार शोक प्रकट किया उसे देखकर अयोध्यासिंह उपाध्याय जी की ये पंक्तियां बड़ी सार्थक प्रतीत होती है :-

'जिसके हों ऊंचे
विचार पक्के मनसूबे।
जो होवे गंभीर भीड़ के पड़े न ऊबे।।
हमें चाहिए आत्म
त्याग रत ऐसा नेता।
रहे जगति हित में
जिसके रोयें तक डूबे।।'

दुला भट्टी के रोम-रोम में अपने देशवासियों के प्रति प्रेम भरा था, वह उनकी व्यथाओं से व्यथित था-इसलिए उनका उद्धार चाहता था। अपने इसी आदर्श के लिए दुला भट्टी ने अपनी समकालीन मुगल सत्ता के सबसे बड़े बादशाह अकबर से टक्कर ली। वह जब तक जीवित रहा तब तक अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संघर्ष करता रहा। देश की सत्ता ने चाहे उसे राजद्रोही मान लिया हो, पर वह राष्ट्रद्रोही नही था, उसका राष्ट्र और उसके राष्ट्रवासी तो उससे असीम स्नेह रखते थे।

दुला भट्टी की स्मृति में मनायी जाती है लोहिड़ी

'भटनेर का इतिहास' के लेखक हरिसिंह भाटी इस पुस्तक के पृष्ठ संख्या 183 पर लिखते हैं :- 'दुला भट्टी की स्मृति में पंजाब, जम्मू कश्मीर, दिल्ली, हरियाणा राजस्थान और पाकिस्तान में (अकबर का साम्राज्य की लगभग इतने ही क्षेत्र पर था) लोहिड़ी का पर्व हर्षोल्लास के साथ मकर संक्रांति (14 जनवरी) से एक दिन पूर्व अर्थात प्रति वर्ष 13 जनवरी को मनाया जाता है।

(लेकिन वर्तमान में मकर संक्रांति अब 15 जनवरी की है इससे पहले 14 जनवरी की मनाई जाती रही है) उसके काल में यदि धनाभाव के कारण कोई हिंदू या मुसलमान अपनी बहन बेटी का विवाह नही कर सकता था तो दुल्ला धन का प्रबंध करके उस बहन बेटी का विवाह धूमधाम से करवाता था। अगर वह स्वयं विवाह के समय उपस्थित नही हो सकता था तो विवाह के लिए धन की व्यवस्था अवश्य करवा देता था।'

इस प्रकार लोगों ने अपने नायक को हुतात्माओं की श्रेणी में रखकर उसे अमर कर दिया। पर हमारा इतिहास उसे आज भी तत्कालीन शासन-सत्ता की दृष्टि से एक राजद्रोही के रूप में ही देख रहा है, इसलिए उसका इतिहास के पन्नों में कहीं कोई उल्लेख नही है। यह न्याय किया है-हमने अपने दुला भट्टी के साथ। दुला भट्टी की स्मृतियों को धुंधलके की ऐसी चादर में लपेटा गया है कि अब तो अधिकांश लोग लोहड़ी के विषय में भी नही जानते कि इस पर्व को अंतत: मनाया क्यों जाता है?

दुला भट्टी को डाकू नहीं कह सकते

दुला भट्टी को मुगलों ने एक डाकू के रूप में उल्लिखित किया है। परंतु उसे डाकू कहना उसकी वीरता का अपमान करना है। कारण कि डाकू का उद्देश्य दूसरों का धन हड़पकर अपनी निजी आवश्यकताओं की पूर्ति करना होता है। इसके लिए डकैत का कोई सिद्धांत नही होता कि उसे ऐसा धन किसी विशेष व्यक्ति से लेना है छीनना है और किसी विशेष व्यक्ति वर्ग से नही छीनना है वह तो धनी, निर्धन छोटे-बड़े किसी से भी धन छीन सकता है। किसी की कमाई की संपत्ति को हड़पने वाला व्यक्ति निश्चित रूप से डकैत होता है।

पर हम देखते हैं कि दुला भट्टी का जीवन ध्येय ऐसा नही था। उसने देश की धन संपत्ति को लूटने वाले डाकू मुगलों के यहां डकैती डाल-डालकर उसे निर्धनों में बांटना आरंभ किया। जो स्वयं लुटेरे थे उन्हें लूटना कोई अनैतिक कार्य नही था। मुगलों से लूटे हुए धन को निर्धनों पर व्यय करना तो उस धन को पवित्र बना देने जैसा था और उससे दुला भट्टी के कार्य को हर व्यक्ति का और तत्कालीन समाज का नैतिक समर्थन प्राप्त हो गया। अत: दुला भट्टी को हमें तत्कालीन भारतीय समाज की दृष्टि से देखना चाहिए, शासक वर्ग की दृष्टि से। उसकी पावन-स्मृति में मनाये जाने वाले पर्व लोहड़ी को हमें और भी अधिक गरिमा प्रदान करनी चाहिए, जिससे कि उसके मनाये जाने के पावन उद्देश्य को लोग समझ सकें और हम भी एक शहीद को उसका सच्चा स्थान इतिहास में दे सकें।

हरिसिंह भाटी कहते हैं :- 'संसार में जहां भी पंजाबी होंगे लोहड़ी अवश्य मनायी जाती है। लोहड़ी के दिन सामूहिक रूप से लकड़ी फूस आदि को होलिका दहन की भांति एकत्र करके ढेरी बनायी जाती है। संध्या समय उस ढेरी को प्रज्ज्वलित करके उसके चारों ओर मौहल्ले के स्त्री, पुरूष बच्चे फेरी लगाते हैं और सब मिलकर एक लाल व लय में....लोकगीत गाते हैं।'

हमारा मानना है कि लोहड़ी (लाहिड़ी)को यदि एक राष्ट्रीय पर्व मान लिया जाए तो इसकी सच्चाई से प्रत्येक भारतीय अवगत हो सकता है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक **मोहन लाल वर्मा** के लिये स्काईटेक प्रिन्टर्स, 10, बोराज ठाकुर का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर (राज.) से मुद्रित एवं म.नं. 3714, कालों का मोहल्ला, कुन्दीगर भैरूं का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। सम्पादक : **मोहन लाल वर्मा** मो. 9782655549 प्रबन्ध सम्पादक- **बृजमोहन बुनकर** 8441958440 E-mail: devchetnanews@gmail.com